सतयुग के स्वर्णिम जीवन की अनुभूति का योगाभास

प्रस्तावना: हम ब्राह्मण आत्माएं सतयुग से लेकर कलियुग के अन्त तक, 5000 वर्ष में 84 जन्म लेकर, इस विश्व नाटक में ऑलराउंड पार्ट बजाती हैं। सतयुग में देवता स्वरूप में हमारा पार्ट सबसे पवित्र, उच्च-स्तरीय और सबसे ज्यादा वैभवशाली होता है, जिसे हम 1250 वर्षों तक 8 जन्मों के लिए बजाते हैं| सतयुग में हम पूर्णरूप से आत्मिक स्मृति में रहते हैं, इसलिए निर्विकारी होते हैं| यहां हम 16 कला संपन्न होते हैं और संपूर्ण रीती से अहिंसक होते हैं। बाबा कहते हैं अब यह कल्प का अंतिम समय है और तुम संगमयुग पर खड़े हो। आने वाला युग स्वर्णिम युग है, जहाँ आपको अपने दैवी पार्ट की शुरूआत करनी है। अब आपकी एक आँख अपने दैवी पार्ट पर होनी चाहिए। इसीलिए हमारे योगाभ्यास के दौरान हम अपने स्वर्णिम युग के उच्च-स्तरीय देवता स्वरूप के रोल को इमर्ज कर उसका अब दिव्य अनुभव करें, जो हमारी आत्माओं में नूधा हुआ है| यह अभ्यास हमें कष्टदायी और दुःखपूर्ण कलियुग से उपराम होने में मदद कर सकता है।

ध्यानाभ्यास:

आरामदायक मुद्रा में बैठें और गहरी गहरी साँस लेते हुए अपनी देह और मन को शिथिल होने दे| अब अपना ध्यान अपने मस्तिष्क के केंद्र पर केंद्रित करें और उस स्थान पर स्वयं को एक दिव्य और देदीप्यमान बिंदु के रूप में देखें।

आइए अब हम इस मानसदर्शन के साथ पुष्टि करें:

"मैं आत्मा स्वर्णयुग की शुरुआत होते ही अपनी भूमिका की यात्रा शुरू कर रहा हूं... मैं आत्मा *परमधाम*, अपना मूल निवास छोड़ कर, एक टिमटिमाते सितारे के रूप में पृथ्वी रंगमंच पर उतर रहा हूं... अब मैं संपूर्ण रीति से पवित्र, सुंदर और पूरी तरह से स्वस्थ शरीर में देवता के रूप में जन्म लेती हूं... प्रथम लक्ष्मीनारायण के साम्राज्य में मेरा यह प्रथम दिव्य जन्म हैं... मैं सतयुग का राजकुमार / राजकुमारी हूँ... यहाँ मैं शानदार स्वर्णिम महल में निवास करती हूँ, जो बहुत सुन्दर रीती से हीरे-मोतीयों से सजाया हुआ हैं... यहां मैं उच्चतम स्तर की पवित्रता, सुख, शांति और वैभव का अनुभव कर रही हूँ... यहाँ संपूर्ण स्वास्थ्य और अथाह धन संपदा है... यहां मैं संपूर्ण निर्विकारी हूँ और सर्वगुण सम्पन्न हूँ...

अब यहाँ प्रात: काल का समय है... पक्षियों के मधुर कलरव को सुनकर मैंने अभी-अभी अपनी आँखें खोली हैं... मेरे माता-पिता प्यार से मुझे देख रहे हैं, पुचकार रहे हैं और मुस्कुरा रहे हैं... बाहर हवा की हल्की सी लहरे चल रही हैं... जो पत्तियों के साथ मिल कर आनंद दायक संगीत पैदा कर रही हैं... पक्षी भी राजमहल के चारों ओर उड़ रहे हैं और अपने संगीत से मुझे प्रसन्न कर रहे हैं... मयूर भी बुलबुल, कोकिल के संगीत पर नृत्य कर

रहे हैं... अब मैं अपना स्नान कर रही हूँ... बहुत ही आनंददायक सुगंधित जल से मेरा स्नान हो रहा हैं... अब मैं अपने शरीर पर जरी कसब के वस्त्रों को धारण करती हूँ... साथ साथ बहुत ही सुन्दर हीरे जवाहरोतों के आभूषणों से मेरा श्रृंगार हो रहा है... विशेष रूप से मेरे सिर पर चमकता हुआ रत्नजडित ताज, मेरे गले में कीमती हार, मेरे हाथो पर कंगन, बाजुओं पर बाजुबंध, कमर पर कमरबंध से में सुशोभित हूँ...

मैं अभी-अभी अपने महल से बाहर आयी हूँ... महल के दोनों ओर बने बगीचे के बिच से गुजरती हुई, सुगंधित फूलों से आच्छादित रास्ते पर चल रही हूँ... चारों ओर अत्यंत सुगंधित और खुशनुमा वातावरण हैं....

दिन के समय मैं संगीत, नृत्य, वाद्य, नाट्य अभिनय, पेंटिग, शिल्प इत्यादि विभिन्न कलाएँ सीखती रहती हूँ और उसका भरपूर आनंद लेती हूं... मेरे सुबह के नाश्ते और दिन के अन्य भोजन में विशेष रूप से स्वादिष्ट फल और मिठाइयाँ होती हैं, जिनका मैं सबसे अधिक आनंद लेती हूँ... मैं जो पानी पीती हूं वह अमृत के समान होता है....

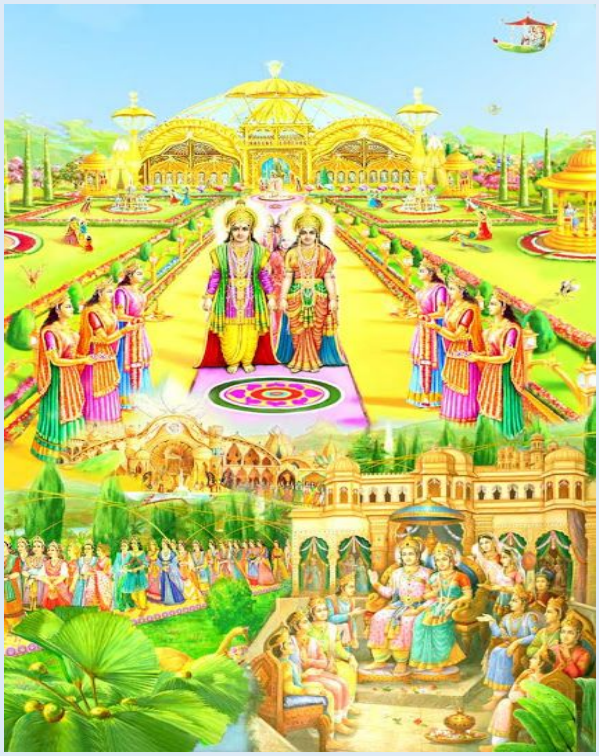

दोपहर का समय है.... मैं अन्य राजकुमारों और राजकुमारियों के साथ बगीचे के बाहर घूम रही हूँ... सारा वातावरण सुगन्धित, पवित्र और मनभावन है.... यहाँ हम सब मिलकर मधुर साजों के संगत में एक घेरे में नृत्य करते हैं.... और अनहद आनंद का अनुभव करते है....

शाम का समय है... मैं *लक्ष्मीनारायण* के महल में जाने के लिए तैयार हो रही हूँ... आज *लक्ष्मीनारायण* के महल में विशेष उत्सव का आयोजन किया गया है.... अब मैं अपने पुष्पक विमान में बैठ रही हूँ.... विमानने उड़ान भर ली है... विमान की यह सफ़र बहुत ही आनंददायक है.... थोड़े ही समय में मैं *लक्ष्मीनारायण* के राजमहल के प्रांगण में उतर रही हूँ.... वैभवशाली उत्सव चल रहा है... मेरा हार्दिक स्वागत किया जा रहा हैं और मुझे आरामदायक आसन पर बिठाया जा रहा हैं... उत्सव में बहुत उत्सुकता से भाग ले रहा हूं और इसका पूरा आनंद ले रहा हूं....

अब रात का समय है.... निंद्राधीन होने का समय हैं.... निंद्रा भी आ रही है... मैं अपने, अच्छे से सजाए गए, सबसे आरामदायक पलंग पर सोने जा रही हूँ.... अब मैं गहरी और मीठी नींद में सो जाती हूँ....”

..... ॐ शांति .....

बी. के. प्रफुलचंद्र

(M) +91 98258 92710